आज की मुरली का सहज सार और सहज पुरुषार्थ ---------- Date:27-10-14

हम आत्माओं को ज्ञान और योग की सही समझ देकर, योग का महत्व समझाने वाले, ज्ञान-सागर बाप ने कहा, ज्ञान और योग दो चीजें हैं. याद की यात्रा (योग) से ही तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं, तुम आत्माये पावन सतोप्रधान बन जायेंगे, बाकी ज्ञान तो है कमाई.

इस ईश्वरीय पढ़ाई के चार मुख्य सबजेक्ट्स है - ज्ञान, योग, धारणा और सेवा. इन चारों में ज्ञान मुख्य है, क्योंकि ज्ञान से हमें समझ मिलती है आत्मा, परमात्मा और सारे सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त की. ज्ञान का उपयोग कर के ही हम आत्माये, परमात्मा से योग लगाती है. वैसे ही धारणा और सेवा भी ज्ञान से ही करते हैं.

ज्ञान मुख्य सबजेक्ट है लेकिन योग का महत्व ज्ञान से भी ज्यादा हैं. योग के आधार से ही, १. हम आत्माओं के जन्म-जन्मान्तर के पाप भस्म होते हैं. २. योग से ही हम आत्माये सतोप्रधान बनती हैं. ३. योग से ही हम आत्माये, पाप-आत्मा से पुण्य-आत्मा बनती हैं. ४. योग से ही स्वर्ग में ऊंच पद प्राप्त होता हैं. ५. योग से ही आत्मा दिव्य-गुणों और शक्तिओं से भरपूर बनती हैं. ६. योग से ही शक्तिमान बनी आत्माओं के लिए सब ईश्वरीय धारणाये सरल हो जाती हैं. ७. सेवा में भी ज्ञान की तलवार पर, योग का जोहर लगने से ही सफलता मिलती हैं. ८. हम आत्माओं को योग में ही माया विघ्न ड़ालती हैं. हमारा माया से युद्ध भी योग में ही होता हैं. अगर हम माया पर जीत पाकर बाबा से अच्छा योग लगाते है तभी हमें मायाजीत आत्मा का टाईटल मिलता हैं. ९. योग से ही हम सारे विश्व की आत्माओं और प्रकृति के पांच तत्वों की मनसा सेवा कर सकते हैं.

बाबा ने कहा, ज्ञान तो तुम किसी को भी समझा सकते हो लेकिन योग को थोड़े ही समझा सकेंगे. ज्ञान है विस्तार, योग है सार. ज्ञान तो तुम बहुत देते हो, योग के लिए तो सिर्फ कहेंगे अपने को आत्मा समझ बाप को याद करो.

बाबा ने आज सारी मुरली से योग के महत्व को समझाने के लिए जो महा-वाक्यों उच्चारे उसे हम अपनी आत्मिक स्थिति में रहकर पढ़ेंगे तो बाबा से अच्छे योग का अनुभव करेंगे.

- बाबा पूछते है, मीठे बच्चों - अपने को रुह या आत्मा समझ यहॉ बैठे हो? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करना - उनको ही महावीर कहा जाता हैं.

- बाप कहते है, हमेशा अपने से पूछते रहो कि हम आत्म-अभिमानी बने हैं? अपने को आत्मा समझ बाप को याद करने से ही हम सुप्रीम आत्मा बनते हैं. सुप्रीम अर्थात शक्तिमान वा महावीर.

- बाबा कहते है, तुम बच्चे अभी ईश्वरीय सर्विस पर हो. तो तुम्हें सबको यही बताना है की बाप सिर्फ कहते हैं मनमनाभव अर्थात अपने को आत्मा समझ शिवबाबा को याद करो.

- बाबा कहते है, याद की यात्रा से ही तुम पापों को भस्म कर पावन होंगे.

- बाबा कहते है, तुम्हारी ज्ञान की तलवार में याद का जोहर भरने से ही औरो को ज्ञान का तीर लगेगा.

- बाबा कहते है, दिन-प्रतिदिन जितना याद की यात्रा को बढ़ाते रहें, इसमें तुम्हारा ही कल्याण है. जितना याद में रहेंगे उतना तुम्हारी कमाई होगी.

- बाबा कहते है, यहॉ तुम्हारा स्नान होता है याद की यात्रा से. योग का स्नान है. जिससे पाप कटते हैं.

- बाबा कहते है, बाप को याद करते-करते शरीर छोड़ेंगे तो ऊंच पद पायेंगे.

- बाबा कहते है, याद से ही तुम पुण्य-आत्मा बनेंगे. तुम्हारी आत्मा पवित्र बन जायेगी.

ॐ शांति.